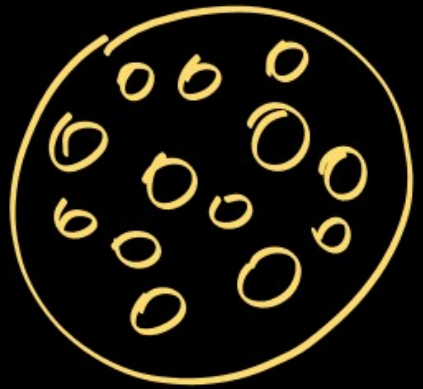

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
कक्षा - 12th | राजनीतिक विज्ञान
ई- पाठशाला
पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
LIVE | 25 SEP | 6:30 PM



परिचय

- विश्व-राजनीति में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का बढ़ता महत्त्व।
- 1960 के दशक से पर्यावरण संबंधी मसलों ने विशेष जोर पकड़ा।
- प्रमुख विषय —
  - पर्यावरण से जुड़ी वैश्विक चिंताएँ
  - पर्यावरण आंदोलन
  - साझी संपदा
  - विश्व की साझी विरासत

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पर्यावरण संबंधी बहसों में भारत का पक्ष
- संसाधनों की होड़ और वैश्विक राजनीति
- मूलवासी जनता (Indigenous People) और उनके अधिकार



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वैश्विक राजनीति में पर्यावरण की चिंता क्यों?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

I. प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएँ

A. कृषि एवं खाद्य-संकट

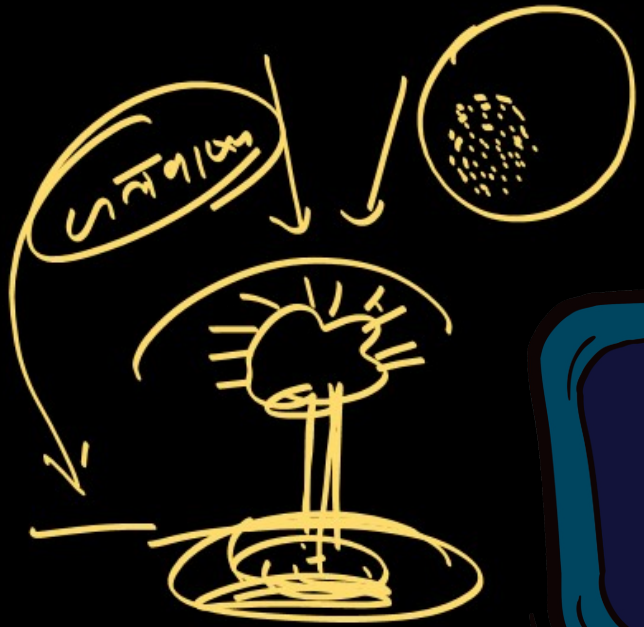
- विश्व में कृषि-योग्य भूमि में वृद्धि नहीं हो रही।
- मौजूदा उपजाऊ भूमि के बड़े हिस्से की उर्वरता कम हो रही है।
- चारागाहों के चारे में कमी।
- मत्स्य-भंडार घट रहे हैं।
- जलाशयों में जलराशि कम तथा प्रदूषण अधिक हो रहा है।
- परिणाम → खाद्य उत्पादन में कमी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. स्वच्छ जल एवं साफ-सफाई

- मानव विकास रिपोर्ट, 2016 के अनुसार →
  - विकासशील देशों में 66.3 करोड़ लोगों को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं।
  - 2 अरब 40 करोड़ लोग साफ-सफाई की सुविधा से वंचित।
  - इसके कारण 30 लाख से अधिक बच्चे प्रतिवर्ष मृत्यु के शिकार होते हैं।

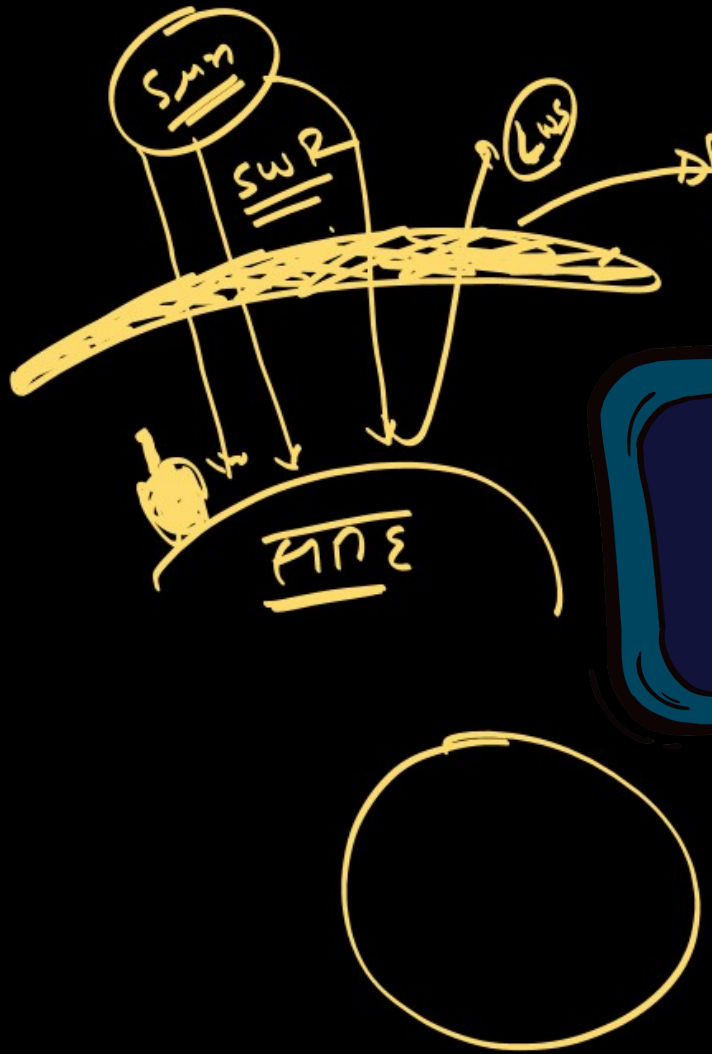


C. वनों और जैव-विविधता का संकट

- प्राकृतिक वन →
  - जलवायु को संतुलित रखते हैं।
  - जलचक्र को संतुलित रखते हैं।
  - जैव-विविधता के भंडार हैं।

परंतु—

- वनों की कटाई जारी।
- लोगों का विस्थापन।
- जैव-विविधता का नुकसान।
- जैव-प्रजातियों से समृद्ध पर्यावासों का विध्वंस।

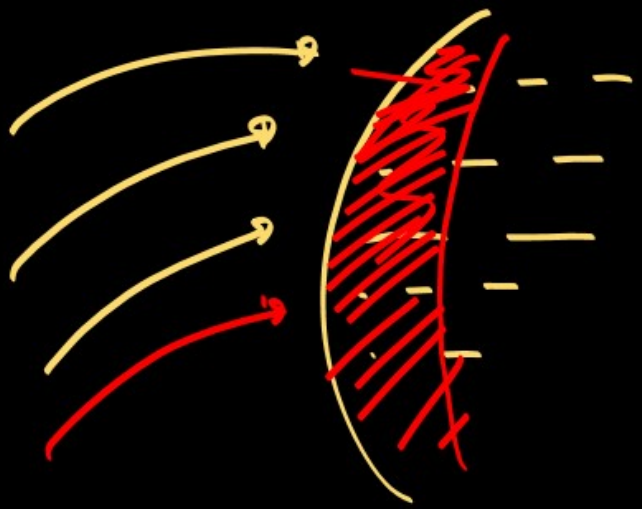


D. ओजोन परत

- ऊपरी वायुमंडल में ओजोन गैस की मात्रा कम हो रही है।
- इसे ओजोन परत में छेद कहा जाता है।
- परिणाम—
  - पारिस्थितिकी तंत्र पर खतरा।
  - मानव स्वास्थ्य पर खतरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



E. समुद्रतटीय प्रदूषण

- समुद्रतटीय क्षेत्रों में प्रदूषण बढ़ रहा है।
- तटवर्ती जल जमीनी क्रियाकलापों से प्रदूषित
- समुद्रतटीय क्षेत्रों में मनुष्यों की सघन बसाहट बढ़ रही है।
- प्रवृत्ति जारी रहने पर समुद्री पर्यावरण की गुणवत्ता में भारी गिरावट संभव।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. पर्यावरण का प्रश्न राजनीतिक क्यों है?

पर्यावरणीय समस्याएँ केवल प्राकृतिक या भौगोलिक समस्याएँ नहीं हैं।

A. राजनीतिक स्वरूप के कारण

- पर्यावरणीय क्षति पर नियंत्रण के लिए सरकारों को कदम उठाने पड़ते हैं।
- अधिकांश समस्याओं का समाधान कोई एक देश अकेले नहीं कर सकता।
- इसलिए वे विश्व-राजनीति का हिस्सा बनती हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

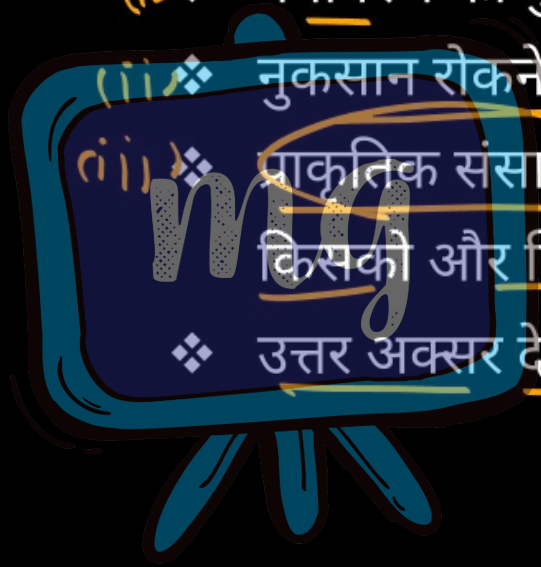
B. प्रमुख राजनीतिक प्रश्न

(i) ❖ पर्यावरण को नुकसान कौन पहुँचाता है?

(ii) ❖ नुकसान रोकने की जिम्मेदारी किसकी है?

(iii) ❖ प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल का अधिकार किसको और कितना है?

❖ उत्तर अक्सर देशों की ताकत से प्रभावित होते हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

III. पर्यावरण का वैश्विक राजनीतिक मुद्दे के रूप में विकास

A. 1960 का दशक

- आर्थिक विकास के कारण पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव की चिंता ने राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया।

B. 1972 – क्लब ऑफ रोम

- 'क्लब ऑफ रोम' ने Limits to Growth प्रकाशित की।
- बढ़ती जनसंख्या के संदर्भ में प्राकृतिक संसाधनों के विनाश की आशंका व्यक्त की।

C. UNEP एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठन

- पर्यावरणीय समस्याओं पर सम्मेलन आयोजित किए।
- अध्ययन को प्रोत्साहित किया।
- उद्देश्य → अधिक कारगर एवं सुलझी हुई पहल।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1972
1987
1992

D. 1987 - ब्रंटलैंड रिपोर्ट

- Our Common Future प्रकाशित।
- चेतावनी → आर्थिक विकास के प्रचलित तौर-तरीके भविष्य में टिकाऊ नहीं होंगे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



E. 1992 — पृथ्वी सम्मेलन

- स्थान → रियो डी जनेरियो, ब्राजील
- संयुक्त राष्ट्रसंघ का पर्यावरण एवं विकास केंद्रित सम्मेलन।
- भागीदारी—
  - 170 देश
  - हजारों स्वयंसेवी संगठन
  - अनेक बहुराष्ट्रीय निगम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



IV. रियो पृथ्वी सम्मेलन, 1992

A. उत्तर बनाम दक्षिण

उत्तरी गोलार्द्ध	दक्षिणी गोलार्द्ध
धनी एवं विकसित देश	गरीब एवं विकासशील देश
मुख्य चिंता—ओजोन परत में छेद	आर्थिक विकास की आवश्यकता
वैश्विक तापवृद्धि पर जोर	आर्थिक विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन के संबंध पर जोर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1992

B. रियो सम्मेलन के प्रमुख परिणाम

- जलवायु परिवर्तन संबंधी नियमाचार।
- जैव-विविधता संबंधी नियमाचार।
- वानिकी संबंधी नियमाचार।
- एजेंडा-21 के रूप में विकास के तौर-तरीके सुझाए गए।
- आर्थिक वृद्धि का तरीका पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाला नहीं होना चाहिए।

इसी को टिकाऊ विकास कहा गया।

(सतत विकास)

❖ मुख्य समस्या

➤ टिकाऊ विकास पर अमल कैसे हो?

❖ आलोचना

➤ कुछ आलोचकों के अनुसार एजेंडा-21 का झुकाव पर्यावरण संरक्षण की बजाय आर्थिक वृद्धि की ओर है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.1 ब्रंटलैंड रिपोर्ट 'अवर कॉमन फ्यूचर' कब प्रकाशित हुई? [Model Paper-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.2 पृथ्वी सम्मेलन कब हुआ?

[Model Paper-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

Q.3 1992 का पृथ्वी सम्मेलन किस देश में हुआ?

[RBSE-2022]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.4 रियो सम्मेलन का मुख्य मुद्दा क्या था?

[RBSE-2024}



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.5 पृथ्वी सम्मेलन में किन्होंने भाग लिया?

[RBSE-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.6 वैश्विक तापवृद्धि के दो प्रभाव बताइए।

[Model Paper-2026]



दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

Q.7 वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की चिंता क्यों आवश्यक है? **[RBSE-2022, RBSE-2025]**

विश्व की साझी संपदा की सुरक्षा

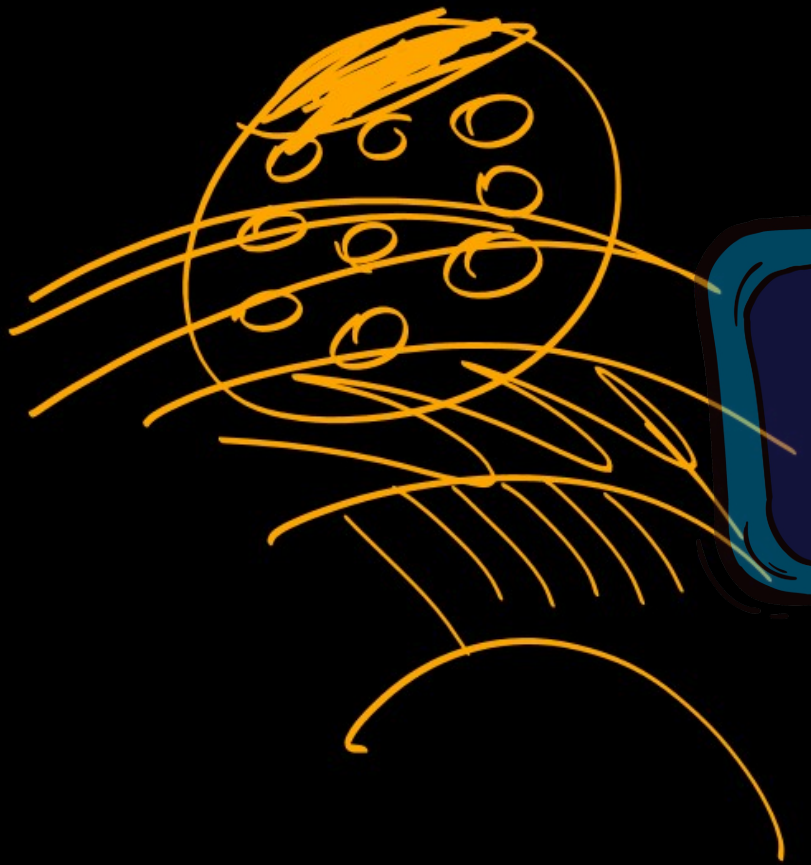


I. साझी संपदा

- ऐसे संसाधन जिन पर किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे समुदाय का अधिकार हो।
- उदाहरण
  - संयुक्त परिवार का चूल्हा
  - चारागाह
  - मैदान
  - कुआँ
  - नदी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



II. वैश्विक संपदा

विश्व के वे हिस्से जो किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर हैं और जिनका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा साझे रूप में किया जाता है।

A. वैश्विक संपदा में शामिल

- पृथ्वी का वायुमंडल
- अंटार्कटिका
- समुद्री सतह
- बाहरी अंतरिक्ष

इन्हें मानवता की साझी विरासत भी कहा जाता है।

III. वैश्विक संपदा की सुरक्षा की चुनौती

A. प्रमुख समझौते

(i) अंटार्कटिका संधि — 1959

(ii) मांट्रियल प्रोटोकॉल — 1987

(iii) अंटार्कटिका पर्यावरणीय प्रोटोकॉल — 1991

B. सहयोग में बाधाएँ

- वैज्ञानिक साक्ष्यों को लेकर मतभेद।
- समय-सीमा पर मतभेद।
- सर्व-सामान्य पर्यावरणीय एजेंडा पर सहमति की कठिनाई।
- उत्तर और दक्षिण के बीच प्रौद्योगिकी तथा औद्योगिक विकास की असमानता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IV. अंटार्कटिका : वैश्विक संपदा का उदाहरण

A. प्रमुख तथ्य

- महादेशीय क्षेत्र → 1 करोड़ 40 लाख वर्ग किमी
- विश्व के निर्जन क्षेत्र का → 26%
- विश्व के स्थलीय हिम का → 90%
- धरती के स्वच्छ जल का → 70%
- समुद्र में अतिरिक्त विस्तार → 3 करोड़ 60 लाख वर्ग किमी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. पारिस्थितिकी

❖ समुद्री पारिस्थितिकी-तंत्र में—

- सूक्ष्म शैवाल
- कवक
- लाइकेन
- समुद्री स्तनधारी
- मत्स्य
- विभिन्न पक्षी
- क्रिल मछली

❖ क्रिल → समुद्री आहार श्रृंखला की धुरी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

C. महत्त्व

- विश्व की जलवायु को संतुलित करने में भूमिका।
- हिमानी परत → ग्रीनहाउस गैस जमाव की जानकारी का स्रोत।
- प्राचीन वायुमंडलीय तापमान की जानकारी मिलती है।



D. स्वामित्व विवाद

- दावा करने वाले देश
  - ब्रिटेन
  - अर्जेन्टीना
  - चिले
  - नार्वे
  - फ्रांस
  - ऑस्ट्रेलिया
  - न्यूजीलैंड

❖ दूसरा दृष्टिकोण

- अंटार्कटिका → विश्व की साझी संपदा
- किसी एक देश के क्षेत्राधिकार में नहीं।

E. 1959 के बाद प्रमुख गतिविधियाँ

- वैज्ञानिक अनुसंधान
- मत्स्य आखेट
- पर्यटन

पर्यावरणीय दबाव

- तेल रिसाव जैसे अवशिष्ट पदार्थ।
- कुछ क्षेत्रों की पर्यावरणीय गुणवत्ता में गिरावट।
- 1980 के दशक के मध्य में अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन परत में छेद की खोज।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

V. बाहरी अंतरिक्ष और वैश्विक संपदा

- बाहरी अंतरिक्ष के प्रबंधन पर उत्तर और दक्षिण की असमानता का प्रभाव।
- प्रमुख मुद्दा—
  - प्रौद्योगिकी
  - औद्योगिक विकास
- बाहरी अंतरिक्ष के दोहन के लाभ—
  - वर्तमान पीढ़ी में सभी के लिए समान नहीं।
  - भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी समान नहीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.1 मानवता की साझी विरासत में क्या शामिल है?

[RBSE-2022]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.1 वैश्विक संपदा अथवा मानवता की साझी विरासत क्या है?

[Model Paper-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

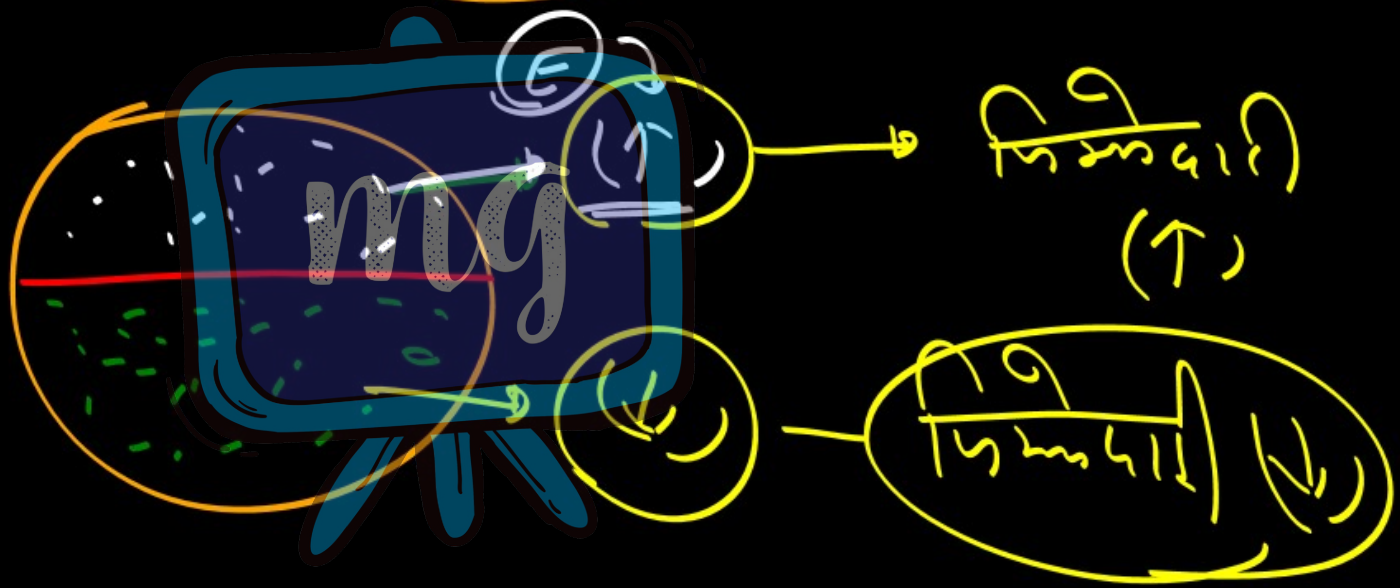
Q.2 अंटार्कटिका पर स्वामित्व का मसला विवादास्पद क्यों है? **[RBSE-2025]**



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियाँ



I. विकसित देशों का दृष्टिकोण

- पर्यावरण की वर्तमान स्थिति पर ध्यान।
- पर्यावरण संरक्षण में सभी देशों की समान जिम्मेदारी चाहते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

II. विकासशील देशों का दृष्टिकोण

(i) ❖ पर्यावरण को अधिकतर नुकसान विकसित देशों के औद्योगिक विकास से हुआ।

(ii) ❖ जिन्होंने ज्यादा नुकसान पहुँचाया → उनकी जिम्मेदारी भी ज्यादा।

(iii) ❖ विकासशील देश अभी औद्योगीकरण की प्रक्रिया में हैं।

(iv) ❖ उन पर विकसित देशों जैसे प्रतिबंध नहीं लगाए जाने चाहिए।

(v) ❖ अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून में उनकी विशिष्ट जरूरतों का ध्यान रखा जाए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

III. 1992 पृथ्वी सम्मेलन

इसी तर्क को स्वीकार कर सिद्धांत दिया गया-

❖ "साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियाँ"

सिद्धांत का आधार

साझा पर्यावरण

↓

पर्यावरणीय अपक्षय में अलग-अलग योगदान

↓

अलग-अलग क्षमता एवं संसाधन

IV. रियो घोषणापत्र का दृष्टिकोण

- पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र की—
  - अखंडता
  - गुणवत्ता
  - बहाली
  - सुरक्षा
  - संरक्षण

  के लिए देशों को सहयोग करना चाहिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पर्यावरणीय अपक्षय में विभिन्न देशों का योगदान अलग-अलग है।
- विकसित देशों—
  - का वैश्विक पर्यावरण पर अधिक दबाव।
  - के पास अधिक प्रौद्योगिक एवं वित्तीय संसाधन।
- इसलिए टिकाऊ विकास के प्रयासों में विकसित देशों की विशेष जिम्मेदारी।

V. UNFCCC 1992

मूल विचार

- देश पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अपनी—
  - क्षमता
  - पर्यावरणीय अपक्षय में हिस्सेदारी

  के लिए देशों को सहयोग करना चाहिए।

❖ स्वीकार किया गया

- ऐतिहासिक एवं वर्तमान ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में विकसित देशों का हिस्सा अधिक।
- विकासशील देशों का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन अपेक्षाकृत कम।

VI. क्योटो प्रोटोकॉल

A. प्रकृति

- अंतर्राष्ट्रीय समझौता
- स्थान → क्योटो, जापान
- सहमति → 1997

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. उद्देश्य

- औद्योगिक देशों के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करने के लक्ष्य निर्धारित करना।



C. संबंधित गैसें

- कार्बन डाइऑक्साइड
- मीथेन
- हाइड्रो-फ्लोरो कार्बन

इन गैसों की वैश्विक तापवृद्धि में भूमिका मानी जाती है।

D. विकासशील देशों की स्थिति

- चीन
- भारत
- अन्य विकासशील देश

को क्योटो प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से अलग रखा गया।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.1 क्योटो प्रोटोकॉल का मुख्य विषय क्या था?

[RBSE-2023]

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 क्योटो प्रोटोकॉल का लक्ष्य क्या था?

[Model Paper-2023]

लघूत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 क्योटो प्रोटोकॉल क्या है?

[Model Paper-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

साझी संपदा



I. विशेषताएँ

- समूह के प्रत्येक सदस्य का स्वामित्व।
- संसाधन की—
  - प्रकृति
  - उपयोग
  - रख-रखाव

  में समान अधिकार एवं उत्तरदायित्व।

II. भारत में

- ग्रामीण समुदायों ने परंपरागत रूप से अधिकार और दायित्व तय किए हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. साझी संपदा में गिरावट

A. कारण

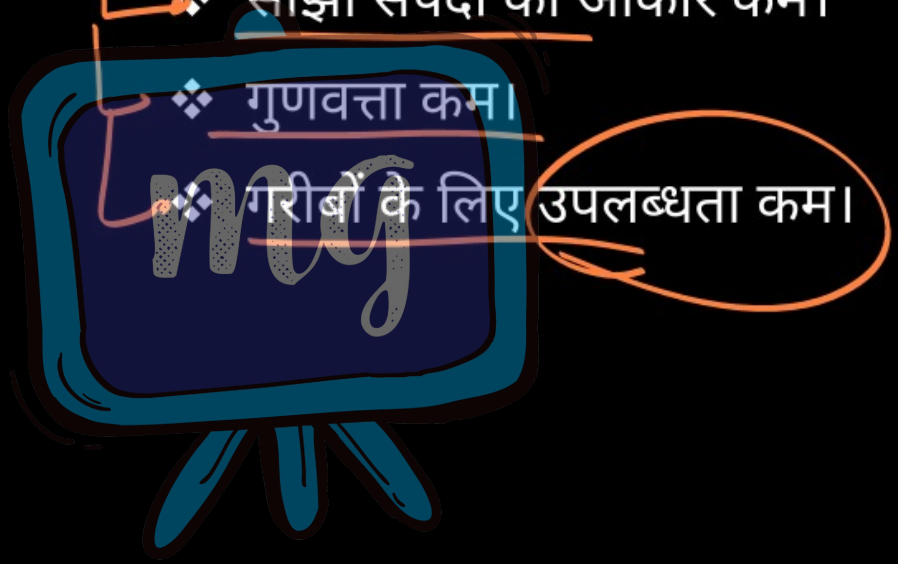
- निजीकरण
- गहनतर खेती
- आबादी की वृद्धि
- पारिस्थितिकी तंत्र में गिरावट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. परिणाम

- साझी संपदा का आकार कम।
- गुणवत्ता कम।
- गरीबों के लिए उपलब्धता कम।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IV. भारत के पावन वन-प्रांतर

A. कारण

- वनों के कुछ भागों को धार्मिक कारणों से नहीं काटा जाता।
- इनमें देवता या पुण्यात्मा का वास माना जाता है।
- इन्हें पावन वन-प्रांतर / देवस्थान कहा जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. विभिन्न क्षेत्रों में नाम

- राजस्थान → वानी, केंकड़ी, ओरान
- झारखंड → जहेरा थान, सरना
- मेघालय → लिंगदोह
- केरल → काव
- उत्तराखंड → थान / देवभूमि
- महाराष्ट्र → देव रहतिस

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

C. महत्त्व

i. समुदाय आधारित संसाधन प्रबंधन।

ii. पारिस्थितिकी संतुलन।

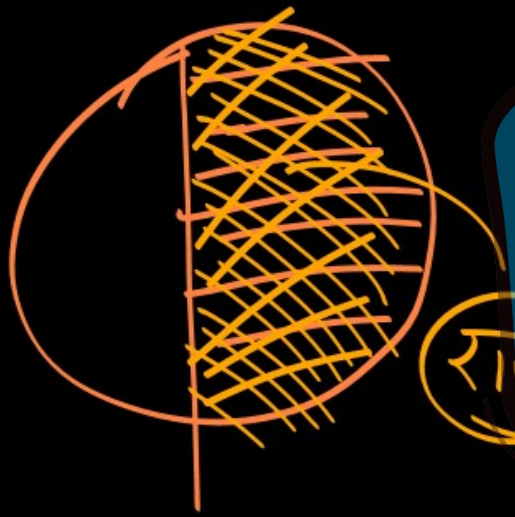
iii. जैव-विविधता संरक्षण।

iv. पारिस्थितिकी संरक्षण।

v. सांस्कृतिक वैविध्य का संरक्षण।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



D. समस्याएँ

- मानव बसाहट का विस्तार।
- नई राष्ट्रीय वन-नीतियों से परंपरागत पहचान मंद।
- कानूनी स्वामित्व और वास्तविक नियंत्रण में अंतर।
  - कानूनी स्वामित्व → राज्य
  - व्यावहारिक नियंत्रण → समुदाय

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 विश्व की साझी संपदा का आकार घटने के दो कारण बताइए। **[Model Paper-2023]**

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 साझी संपदा क्या है? [Model Paper-2024]



Q.3 भारत में 'पावन वन-प्रांतर' का अर्थ क्या है?

[Model Paper-2025]



दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 भारत में पावन वन-प्रांतर की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए। [RBSE-2026]

पर्यावरण के मसले पर भारत का पक्ष



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

I. क्योटो प्रोटोकॉल

- भारत ने 2002 में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर एवं अनुमोदन किया।
- भारत, चीन एवं अन्य विकासशील देशों को इसकी बाध्यताओं से छूट।

A. कारण

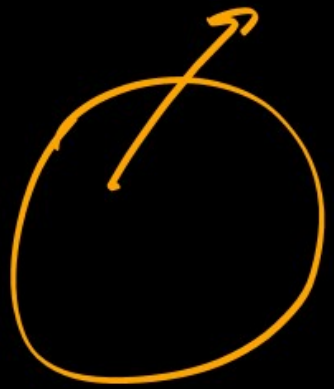
- औद्योगीकरण के दौर के ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में इन देशों का योगदान नगण्य था।
- औद्योगीकरण के दौर को वर्तमान वैश्विक तापवृद्धि एवं जलवायु परिवर्तन का जिम्मेदार माना गया।

B. भारत का मुख्य तर्क -- ऐतिहासिक उत्तरदायित्व

- ग्रीनहाउस गैसों की ऐतिहासिक एवं वर्तमान जवाबदेही मुख्यतः विकसित देशों की।
- विकासशील देशों की पहली और अपरिहार्य प्राथमिकता-
  - आर्थिक विकास
  - सामाजिक विकास

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



C. 2005 — G-8 बैठक भारत ने कहा–

- विकासशील देशों का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन विकसित देशों की तुलना में बहुत कम।
- उत्सर्जन घटाने की अधिक जिम्मेदारी विकसित देशों की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. भारत और प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन

- वर्ष 2000 → भारत का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन 0.9 टन।
- अनुमानित 2030 → 1.6 टन प्रति व्यक्ति।
- विश्व का वर्ष 2000 का औसत → 3.8 टन प्रति व्यक्ति।
- 2030 में भी भारत का अनुमानित उत्सर्जन इस औसत के आधे से कम बताया गया।

III. पर्यावरण सुरक्षा के लिए भारत के कदम

नीतिगत पहल

- नेशनल ऑटो-फ्यूल पॉलिसी
  - वाहनों के लिए स्वच्छतर ईंधन।
- ऊर्जा-संरक्षण अधिनियम, 2001
  - ऊर्जा के अधिक कारगर उपयोग की पहल।
- बिजली अधिनियम, 2003
  - नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- प्राकृतिक गैस के आयात की ओर रुझान।
- स्वच्छ कोयले के उपयोग पर आधारित प्रौद्योगिकी।
- बायोडीजल संबंधी राष्ट्रीय मिशन की पहल।
- भारत ने 2 अक्टूबर 2016 को पेरिस जलवायु समझौते का अनुमोदन किया।
- पुनर्नवीकृत ऊर्जा के बड़े कार्यक्रमों में से एक भारत में चल रहा है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

IV. रियो समझौतों पर भारत का पुनरावलोकन

1997 का पुनरावलोकन

निष्कर्ष—

- विकासशील देशों को रियायती शर्तों पर—
  - नए एवं अतिरिक्त वित्तीय संसाधन
  - बेहतर पर्यावरणीय प्रौद्योगिकी
- उपलब्ध कराने में सार्थक प्रगति नहीं हुई।

V. भारत की माँग

❖ विकसित देश—

- वित्तीय संसाधन दें।
- स्वच्छ प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराएँ।

ताकि विकासशील देश UNFCCC की प्रतिबद्धताएँ पूरी कर सकें।

VI. SAARC के संदर्भ में

- पर्यावरण के प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर समान राय बनाई जाए।
- इससे क्षेत्र की आवाज अधिक प्रभावशाली होगी।

रिक्त स्थान

Q.1 भारत ने वर्ष _____ में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर/अनुमोदन किया।

[Model Paper-2025]

लघूत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 पर्यावरण संरक्षण में भारत के योगदान के दो बिंदु बताइए। **[RBSE-2024]**

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयास बताइए। **[Model Paper-2026]**

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पर्यावरण आंदोलन - एक या अनेक?



I. स्वरूप

- पर्यावरणीय चुनौतियों के विरुद्ध पहल—
  - सरकारों द्वारा
  - पर्यावरण-सचेत कार्यकर्ताओं द्वारा

कार्यकर्ताओं का स्तर

- अंतर्राष्ट्रीय
- स्थानीय

II. विशेषताएँ

- जीवंत विविधतापूर्ण
- ताकतवर सामाजिक आंदोलन
- राजनीतिक कार्रवाई के नए रूप नए विचार
- वैयक्तिक एवं सामूहिक जीवन के भविष्य के लिए दिशा

III. वन आंदोलन : उत्तर बनाम दक्षिण

A. दक्षिणी देशों के वन

- निर्जन नहीं।
- लोग वनों में रहते हैं।
- मनुष्य एवं पर्यावरण को अलग नहीं माना जाता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. उत्तरी देशों का दृष्टिकोण

- वन को प्राय: निर्जन क्षेत्र के रूप में देखा गया।
- पर्यावरण को मनुष्य से अलग वस्तु मानने की प्रवृत्ति।
- वन को बाग-बगीचे या अभयारण्य बनाकर मनुष्य से बचाने का विचार।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



C. विजनपन का दृष्टिकोण प्रमुख

- ऑस्ट्रेलिया
- स्केंडिनेविया
- उत्तरी अमेरिका
- न्यूजीलैंड

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

IV. प्रजाति संरक्षण के अभियान

A. उदाहरण

- फिलीपिन्स → गरुड़ एवं अन्य शिकारी पक्षियों की रक्षा।
- भारत → बंगाल टाइगर संरक्षण।
- अफ्रीका → हाथीदाँत व्यापार और हाथियों को मारने के विरुद्ध अभियान।
- ब्राजील एवं इंडोनेशिया → वन एवं विजनपन संबंधी संघर्ष।

B. विशेषताएँ

- विशिष्ट प्रजातियों का संरक्षण।
- वन-पर्यावासों का संरक्षण।
- जैव-विविधता पर जोर।
- कुछ अभियानों में WWF जैसे संगठनों द्वारा शुरुआत एवं वित्तीय सहायता।
- स्थानीय लोगों की भागीदारी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

V. खनिज उद्योग और पर्यावरण आंदोलन



A. खनिज उद्योग की प्रकृति

- पृथ्वी के सबसे ताकतवर उद्योगों में से एक।
- उदारीकरण के कारण दक्षिणी देशों की अर्थव्यवस्थाएँ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए खुलीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. पर्यावरणीय प्रभाव

- भूमिगत संसाधनों का निष्कर्षण।
- रसायनों का व्यापक इस्तेमाल।
- भूमि प्रदूषण।
- जलमार्ग प्रदूषण।
- स्थानीय वनस्पति का विनाश।
- समुदायों का विस्थापन।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

C. उदाहरण

फिलीपिन्स

- विभिन्न समूहों ने ऑस्ट्रेलियाई बहुराष्ट्रीय कंपनी Western Mining Corporation के खिलाफ अभियान चलाया।
- ऑस्ट्रेलिया में भी कंपनी का विरोध—
  - परमाण्विक शक्ति के विरोध के कारण।
  - ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के मूल अधिकारों की पैरोकारी के कारण।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

VI. बाँध-विरोधी एवं नदी हितैषी आंदोलन

- बड़े बाँधों के विरुद्ध संघर्ष।
- बाँध-विरोधी आंदोलनों को अब नदियों को बचाने वाले आंदोलनों के रूप में भी देखा जाता है।

A. मुख्य माँग

- नदियों एवं नदी-घाटियों का—
  - अधिक टिकाऊ
  - अधिक न्यायसंगत प्रबंधन।

B. फ्रैंकलिन नदी आंदोलन

- 1980 के दशक के शुरुआती और मध्यवर्ती वर्षों में।
- ऑस्ट्रेलिया में।
- फ्रैंकलिन नदी एवं आसपास के वन की रक्षा।
- वन संरक्षण + विजनपन + बाँध-विरोध।

C. भारत

- प्रमुख बाँध-विरोधी एवं नदी हितैषी आंदोलन।
- सबसे प्रसिद्ध → नर्मदा आंदोलन।
- भारतीय पर्यावरण एवं बाँध-विरोधी आंदोलनों की एक समान विशेषता → अहिंसा।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 खनिज उद्योगों से पर्यावरण को दो हानियाँ बताइए। [RBSE-2023]

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 विश्व के विभिन्न भागों में खनिज उद्योगों का विरोध क्यों होता है? **[RBSE-2026]**



संसाधनों की भू-राजनीति



I. मूल प्रश्न

- “किसे, क्या, कब, कहाँ और कैसे हासिल होता है?”
- इन्हीं प्रश्नों से संसाधनों की भू-राजनीति जुड़ी है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. ऐतिहासिक संदर्भ

❖ यूरोपीय शक्तियों के वैश्विक प्रसार में संसाधन—

- साधन भी थे।
- उद्देश्य भी थे।

पश्चिमी दृष्टिकोण

❖ संसाधनों की भू-राजनीति को देखा गया—

- व्यापारिक संबंधों
- युद्ध
- ताकत

के संदर्भ में।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

III. यूरोपीय शक्तियाँ और संसाधन

- प्रमुख आधार
  - विदेशों में संसाधनों की मौजूदगी।
  - समुद्री नौवहन की क्षमता।
- 17वीं सदी के बाद
  - जहाजों के लिए इमारती लकड़ी की आपूर्ति प्रमुख प्राथमिकता।

- प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध
  - सामरिक संसाधनों की निर्बाध आपूर्ति का महत्त्व स्पष्ट।
  - विशेष रूप से → तेल।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IV. शीतयुद्ध और संसाधन

❖ उत्तरी विकसित देशों ने संसाधनों की सतत आपूर्ति के लिए—

- संसाधन-दोहन क्षेत्रों के आसपास सेना तैनात की।
- समुद्री परिवहन मार्गों के आसपास सेना तैनात की।
- महत्त्वपूर्ण संसाधनों का भंडारण किया।
- संसाधन उत्पादक देशों में मनपसंद सरकारों का समर्थन किया।
- बहुराष्ट्रीय निगमों को समर्थन।
- हितसाधक अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को समर्थन।

- मुख्य उद्देश्य
- संसाधनों तक अबाध पहुँच।
- शीतयुद्ध के बाद
  - प्राथमिक चिंता → संसाधनों की सुरक्षित आपूर्ति।
  - रेडियोधर्मी खनिजों से जुड़े व्यावसायिक फैसलों पर भी चिंता।
  - वैश्विक रणनीति में तेल सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधनों में बना रहा।

V. तेल की भू-राजनीति

- महत्त्व
  - बीसवीं सदी के अधिकांश समय में विश्व अर्थव्यवस्था तेल पर निर्भर।
  - परिवहन योग्य ईंधन के रूप में अपरिहार्य।
  - तेल से विपुल संपदा जुड़ी।
  - इसलिए तेल पर नियंत्रण के लिए राजनीतिक संघर्ष।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

VI. पश्चिम एशिया के तेल से संबंधित तथ्य

- खाड़ी क्षेत्र → विश्व के कुल तेल उत्पादन का 30%।
- विश्व के ज्ञात तेल भंडार का 64% इस क्षेत्र में।
- तेल माँग में बड़ी वृद्धि होने पर पूर्ति करने में सक्षम प्रमुख क्षेत्र।
- सऊदी अरब के पास विश्व के तेल भंडार का लगभग एक चौथाई।
- सऊदी अरब → सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश।
- इराक का ज्ञात तेल भंडार → सऊदी अरब के बाद दूसरा।
- इराक का तेल भंडार 112 अरब बैरल से अधिक होने की संभावना बताई गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



VII. पेट्रोलियम पर निर्भरता

- टूथपेस्ट, पेसमेकर, पेंट, स्याही आदि अनेक उत्पाद पेट्रोलियम पर आधारित।
- विश्व में परिवहन के लिए आवश्यक ऊर्जा का 95% पेट्रोलियम से पूरा होने का उल्लेख।
- औद्योगिक दुनिया की पेट्रोलियम पर भारी निर्भरता।
- इसी कारण संसाधन के नियंत्रण को लेकर देशों के बीच विवाद।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

VIII. जल की भू-राजनीति

पानी का महत्त्व

- विश्व-राजनीति का महत्त्वपूर्ण संसाधन।
- कुछ क्षेत्रों में साफ पानी की कमी।
- स्वच्छ जल का वितरण असमान।

परिणाम

साझे जल-संसाधनों पर मतभेद

↓

तनाव

↓

हिंसक संघर्ष की संभावना

↓

"जलयुद्ध"

IX. जल-संघर्ष का सामान्य स्वरूप

❖ उद्गम के निकट देश

- बाँध बनाता है।
- अत्यधिक सिंचाई करता है।
- जल को प्रदूषित करता है।

❖ नीचे की ओर स्थित देश

आपत्ति करता है क्योंकि–

- मिलने वाले पानी की मात्रा घट सकती है।
- पानी की गुणवत्ता कम हो सकती है।

X. जल-संघर्ष के उदाहरण

1950–1960 के दशक

- इजरायल
- सीरिया
- जॉर्डन

कारण → जॉर्डन और यारमुक नदियों के पानी का बहाव मोड़ने की कोशिश।

फरात नदी

- तुर्की
- सीरिया
- इराक के बीच बाँध निर्माण को लेकर विवाद।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 संसाधनों की भू-राजनीति क्या है?

(Model Paper-2026)



मूलवासी और उनके अधिकार



I. मूलवासी प्रश्न का महत्त्व

यह तीन क्षेत्रों को जोड़ता है—

पर्यावरण + संसाधन + राजनीति



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

II.संयुक्त राष्ट्रसंघ की 1982 की शुरुआती परिभाषा

मूलवासी-

- उन लोगों के वंशज हैं जो किसी मौजूदा देश में लंबे समय से रहते थे।
- बाद में दूसरी संस्कृति या जातीय मूल के लोग उस देश में आए।
- मूल लोगों को अधीन बना लिया गया।

III. मूलवासियों की विशेषता

वे आज भी अधिक महत्त्व देते हैं-

- अपनी परंपरा
- सांस्कृतिक रिवाज
- विशिष्ट सामाजिक ढाँचा
- विशिष्ट आर्थिक ढाँचा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IV. विश्व में मूलवासी

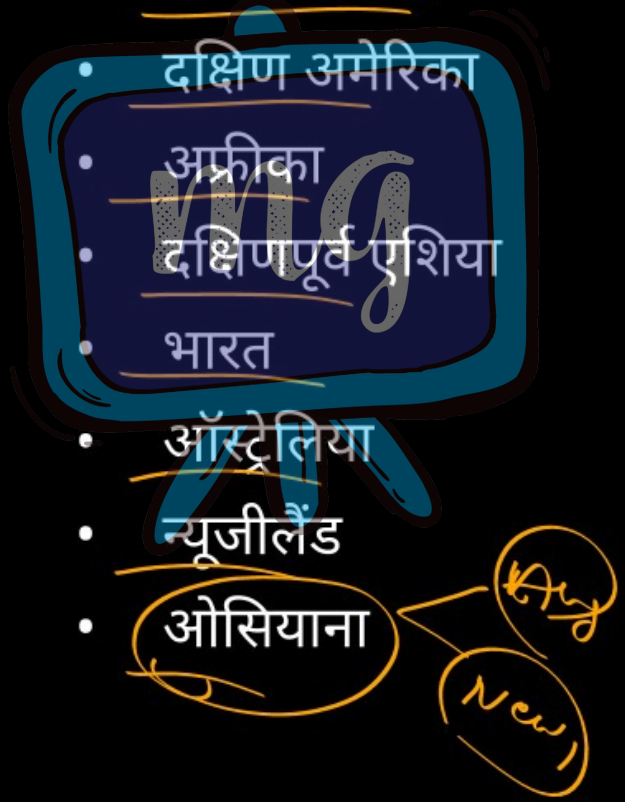
विश्व के विभिन्न भागों में लगभग 30 करोड़ मूलवासी होने का उल्लेख।

A. उदाहरण

- फिलीपिन्स के कोरडिलेरा क्षेत्र → 20 लाख
- चिले के मापुशे → 10 लाख
- बांग्लादेश के चटगांव पर्वतीय क्षेत्र → 6 लाख
- उत्तर अमेरिकी मूलवासी → 35 लाख
- पनामा नहर के पूर्व के कुना → 50 हजार
- उत्तरी सोवियत → 10 लाख

B. प्रमुख क्षेत्र

- मध्य अमेरिका
- दक्षिण अमेरिका
- अफ्रीका
- दक्षिणपूर्व एशिया
- भारत
- ऑस्ट्रेलिया
- न्यूजीलैंड
- ओसियाना



V. मूलवासियों की प्रमुख माँगें

- विश्व-बिरादरी में बराबरी का दर्जा।
- स्वयं को स्वतंत्र पहचान वाले मूलवासी समुदाय के रूप में मान्यता।
- अपने मूल वासस्थान पर अधिकार।

भूमि के प्रति दृष्टिकोण

विश्वभर में मूलवासियों का दावा—

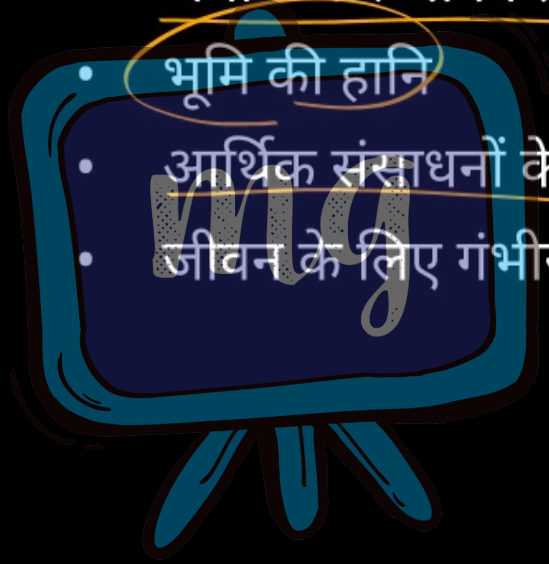
"हम यहाँ अनंत काल से रहते चले आ रहे हैं।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मूल आधार

- जमीन और जीवन-प्रणाली का गहरा संबंध।
- भूमि की हानि
- आर्थिक संसाधनों के आधार की हानि
- जीवन के लिए गंभीर खतरा



VI. भारत में मूलवासी

A. प्रयुक्त शब्द

- अनुसूचित जनजाति
- आदिवासी

B. जनसंख्या

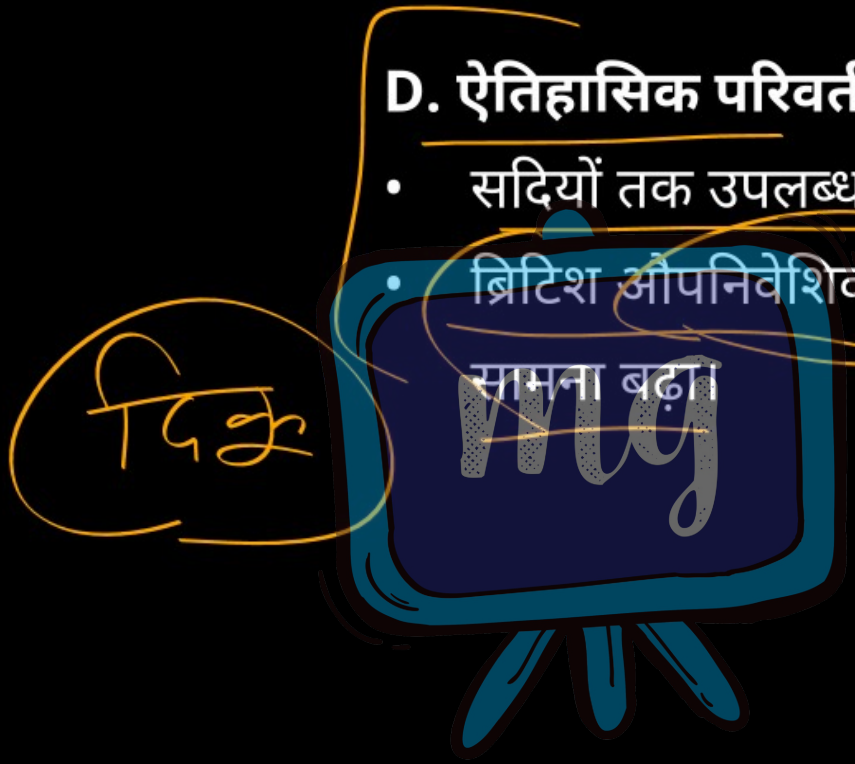
- कुल जनसंख्या का लगभग 8%।

C. आजीविका

- कुछ घुमन्तू जनजातियों को छोड़कर अधिकांश आदिवासी आबादी खेती पर निर्भर।

D. ऐतिहासिक परिवर्तन

- सदियों तक उपलब्ध भूमि पर खेती।
- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के बाद बाहरी लोगों से सामना बढ़ा।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

VII. विकास और भारतीय आदिवासी

- राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संदर्भ में संवैधानिक सुरक्षा।
- देश के विकास से अपेक्षाकृत कम लाभ।
- स्वतंत्रता के बाद अनेक विकास परियोजनाएँ।
- बड़ी संख्या में लोगों का विस्थापन।
- विकास परियोजनाओं से विस्थापित समुदायों में आदिवासियों की संख्या बहुत अधिक।

VIII. मूलवासी अधिकारों का अंतर्राष्ट्रीय विकास

- लंबे समय तक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में उपेक्षा।
- 1970 के दशक में विभिन्न क्षेत्रों के मूलवासी नेताओं के बीच संपर्क बढ़ा।
- साझा अनुभवों और चिंताओं को संगठित रूप मिला।

1975

World Council of Indigenous People का गठन।

- संयुक्त राष्ट्रसंघ में इसे परामर्शदायी परिषद का दर्जा मिला।
- आदिवासी सरोकारों से संबंधित 10 अन्य स्वयंसेवी संगठनों को भी ऐसा दर्जा मिला।

रिक्त स्थान

Q.1 . चिली में _____ नामक मूलवासी रहते हैं।

(Model Paper-2024)

रिक्त स्थान

Q.1 वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इंडिजिनस पीपल का गठन _____ में हुआ। (RBSE-2022)

